9

दक्षिण भारतीय चित्रकला

पिछले अध्याय में आपने पहाड़ी चित्रकला के बारे में जाना। प्रस्तुत पाठ में हम दक्षिण भारतीय चित्रकला के बारे में जानेंगे। आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलांगाना तथा शेष दक्षिण भारत की अपनी पारंपरिक चित्र-शैलियाँ हैं, जिनका विकास एक लंबे कालखण्ड में वहाँ के विभिन्न राजवंशों के संरक्षण में हुआ। इनमें 16वीं से 19वीं सदी के मध्य बीजापुर, हैदराबाद के मुस्लिम शासकों के संरक्षण में बने दक्कनी लघुचित्र, विजयनगर के नायक और मराठा शासकों के संरक्षण में विकसित हुए तंजौर चित्र तथा मैसूर के ओडेयरू शासकों के प्रोत्साहन से पल्लवित हुए। इन सभी चित्र-शैलियों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, परंतु इन सभी चित्र-शैलियों पर विजयनगर कला की चित्र-शैली का गहरा प्रभाव रहा और यही तत्त्व उन्हें एक सूत्र में बाँधते हैं।

इनके अतिरिक्त आंध्रप्रदेश के कलमकारी तथा केरल के मंदिरों की दीवारों पर अंकित भित्तिचित्र दक्षिण भारत की अन्य चित्र-शैलियाँ हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- दक्षिण भारत की पारंपरिक चित्र-शैलियों का उल्लेख कर सकेंगे;
- विभिन्न चित्र-शैलियों को पल्लवित करने वाले शासकों के बारे में लिख सकेंगे;
- दक्षिण भारत के उन केन्द्रों का उल्लेख कर सकेंगे, जहाँ इन शैलियों का विकास हुआ;
- मैसूर चित्र-शैली की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे;
- दक्कनी लघुचित्र-शैलियों की व्याख्या कर सकेंगे;
- विभिन्न शैलियों की चित्रण-पद्धति का वर्णन कर सकेंगे।

9.1 तंजौर चित्र-शैली

आइए, अब सबसे पहले, तंजौर चित्रों की शैली के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

तंजौर चित्र-शैली एक महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय चित्र-शैली है, जिसका नाम उसके उद्गम-स्थल तमिलनाडु के तंजौर शहर के नाम पर पड़ा। 16वीं सदी से 18वीं सदी के मध्य विजयनगर के नायक और मराठा शासकों के संरक्षण में विकसित इस चित्र-शैली के उत्थान में तंजौर तथा त्रिची के राजू और मदुरई के नायडू समुदायों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन चित्रों के विषय मुख्यत: हिंदू देवी-देवता, राजा, रजवाड़े और मिथकीय चरित्र हैं। लकड़ी के तख्ते पर कपड़ा चिपकाकर बनाए जाने के कारण इन चित्रों को तमिल में 'पालगई पदानी' भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है- लकड़ी पर बने चित्र।

चित्र 9.1: पंचमुखी आंजनेय

तंजौर चित्र, दक्षिण भारतीय परंपराओं और धर्म से जुड़े हैं। अतः इनमें पवित्रता और समर्पण का भाव है। इन चित्रों की मुख्य विशेषता– कीमती पत्थरों, मोतियों, शीशे के टुकड़ों तथा स्वर्ण से की गई सज्जा है। चमकदार भड़कीले रंगों के साथ स्वर्ण तथा कीमती पत्थरों का प्रयोग तथा परिष्कृत कलात्मक कार्य इन चित्रों की पहचान है। ये चित्र भवन की आंतरिक सज्जा को अधिक सौंदर्यपूर्ण बना देते हैं। यह चित्र-शैली उस काल में विकसित हुई जिस समय इस क्षेत्र में विशाल मंदिरों का निर्माण हो रहा था। अतः इन चित्रों के विषय भी देवी-देवता रहे। अत्यधिक कौशलपूर्ण ढंग से बनाए गए तंजौर चित्र अपने आपमें अनूठे हैं। अन्य परंपरागत भारतीय चित्रों से ये इस अर्थ में भिन्न होते हैं कि इनमें बुनियादी चित्रांकन के ऊपर कीमती पत्थरों आदि से सज्जा की जाती है, जो इनमें एक त्रिआयामी प्रभाव भी उत्पन्न कर देता है। आमतौर पर प्रसिद्ध प्रतिमाओं की भाँति इन चित्रों में देवी-देवताओं के चेहरे गोल तथा दैवीय ओज से परिपूर्ण बनाए गए हैं। बालकृष्ण की विभिन्न भंगिमाएँ इन चित्रों का प्रिय विषय है। तंजौर शैली के चित्र काँच पर भी बनाए गए हैं। चित्र बनाने हेतु जो सामग्री प्रयुक्त की जाती है, वे हैं– लकड़ी का तख्ता, सफेद सूती कपड़ा, चाक पाउडर, गोंद, खनिज रंग, सोने के वर्क, कीमती पत्थर या नग, शीशे के टुकड़े आदि।

शीर्षक : **पंचमुखी आञ्जनेय/पंचमुखी हनुमान**

समय : समकालीन

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : लकड़ी तथा कपड़े पर खनिज रंग, स्वर्णपत्र तथा कांच के नग

सामान्य विवरण

प्रस्तुत चित्र तंजौर शैली में बना पंचमुखी हनुमान का चित्र है। चित्र के हाशिये को एक द्वार का रूप दिया गया है। संपूर्ण हाशिये पर स्वर्णपत्र चढ़ाया गया है, जिसके ऊपरी मेहराब को लाल और हरे नगीनों के जड़ाव से अलंकृत किया गया है। मुख्य प्रतिमा में योद्धारूपी हनुमान को पाँच मुखी तथा दस भुजाधारी बनाया गया है। मध्य में वानर मुख, दायीं ओर नरसिंह तथा हयग्रीव और बाईं ओर वीरभद्र तथा वराह मुख बनाए गए हैं। दसों हाथों में विभिन्न अस्त्र-शस्त्र सामान्य सतहों से उभरे हुए बनाए गए हैं। हाशिए, पाँचों सिरों पर मुकुट और सभी अस्त्र-शस्त्र को सोने के पत्ती से ढँका वैभवपूर्ण बनाया गया है।

अत्यधिक कौशलपूर्ण ढंग से बनाया गया यह चित्र अपने आप में अनूठा है। बुनियादी चित्रांकन के ऊपर कीमती पत्थरों आदि से सज्जा तथा उभारदार कार्य इसमें एक त्रिआयामी प्रभाव भी उत्पन्न कर रहा है।

चित्र बनाने हेतु जो सामग्री प्रयुक्त की गई है वह है– लकड़ी का तख्ता, सफेद सूती कपड़ा, चाक पाउडर, गोंद, खनिज रंग, सोने के वर्क कीमती पत्थर या नग, शीशे के टुकड़े आदि। चित्रांकन का कार्य विभिन्न चरणों में पूरा किया जाता है; जैसे –

1. चित्रफलक तैयार करना
2. बनाये जाने वाले चित्र की रूपरेखा बनाना
3. उभारदार आधार बनाना
4. चित्रकारी एवं रंगांकन
5. नगों, स्वर्णवर्क आदि के टुकड़े चिपकाना
6. अंतिम रूप से चित्र तैयार करना

पाठगत प्रश्न 9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. तंजौर चित्रकला का काल है–

   (i) समकालीन (ii) प्राचीन

   (iii) पूर्व-ऐतिहासिक (iv) इनमें से कोई नहीं

2. तंजौर चित्रों में प्रयुक्त सामग्री का नाम है–

   (i) मिट्टी (ii) सोना

   (iii) चाँदी (iv) कांस्य

3. 'पंचमुखी' शब्द का अर्थ है–

   (i) चार आँखें (ii) चार हाथ

   (iii) पाँच सिरवाला (iv) ये सभी

9.2 मैसूर चित्र कला

आपने तंजौर कला के बारे में जाना। आइए, अब आप मैसूर कला के बारे में जानते हैं।

बुनियादी सूचना

दक्षिण भारतीय शास्त्रीय चित्र-शैलियों में मैसूर चित्र महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस शैली का विकास कर्नाटक के मैसूर नगर में 18वीं सदी के दौरान हुआ। मैसूर में विकसित होने के कारण यह चित्र-शैली, मैसूर चित्र-शैली कहलाई।

कर्नाटक में चित्रकला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। विजय नगर शासकों तथा उनके सामंतों ने 14वीं से 16वी सदी के मध्य में कला और साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया जिसके परिणामस्वरूप विजयनगर शैली के चित्रों ने भारतीय कला में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। मैसूर और तंजौर चित्र इसी विजयनगर चित्र-शैली की दो उपशाखाएँ हैं। मैसूर चित्र अपनी सादगी, सहज रंगयोजना एवं विवरणात्मक चित्रांकन हेतु जाने जाते हैं। इन चित्रों के विषय हिंदू देवी-देवता और उनसे संबंधित कथानक हैं।

मैसूर चित्र पाण्डुलिपियों में भी चित्रित किए गए। मुम्माडि कृष्णराज ओडेयरू के काल में 'श्रीतत्त्वनिधि' नामक ग्रंथ की रचना की गई। 1500 पृष्ठों की इस पाण्डुलिपि में सैकड़ों चित्र अंकित हैं। इस ग्रंथ में चित्रकारों के लिए भी विभिन्न विषयों से संबंधित चित्रांकन हेतु निर्देश दिए गए हैं, जिनमें चित्र संयोजन, रंगों के चुनाव तथा उनकी मनोदशा आदि का ब्यौरा है। इन चित्रों में देवी-देवताओं और पौराणिक विषयों के साथ-साथ विभिन्न रागों, ऋतुओं, पर्यावरण सम्बन्धी घटनाओं, पशु-पक्षियों, वनस्पति आदि का प्रभावशाली चित्रण किया गया है।

चित्र 9.2: मत्स्यावतार

शीर्षक	:	**मत्स्यावतार (गंजिफा कार्ड)**
समय	:	बीसवीं शताब्दी
कलाकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	कपड़ों पर खनिज रंग
संग्रह	:	शिल्प-संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

16वीं सदी में विजयनगर साम्राज्य में पतन के उपरांत राजा ओडेयरू ने इस क्षेत्र की चित्रकला को पुन: जीवित करने का महत्वपूर्ण कार्य आरंभ किया। किंतु उसके समय के महलों तथा मंदिरों में बनाए गए चित्र बाद में टीपू सुल्तान और अंग्रेजों के मध्य होने वाले युद्धों के कारण ध्वस्त हो गए। अठारहवीं सदी में टीपू सुल्तान के पतन के बाद मुम्माडि कृष्णराज ओडेयरू मैसूर का शासक बना। मैसूर राजपरिवार ने मैसूर के पारंपरिक प्राचीन संगीत, कला व साहित्य को पुन: समृद्धि की ऊँचाइयों तक पहुँचाया। मैसूर में जगनमोहन महल की दीवारों पर इस समय बनाए गए सुंदर चित्र आज भी देखे जा सकते हैं। पारंपरिक मैसूर चित्रकार अपने लिए चित्रण सामग्री स्वयं ही तैयार करते थे। वनस्पति और खनिज रंगों का प्रयोग किया जाता था, जिन्हें पत्तियों, फूलों तथा पत्थरों से प्राप्त किया जाता था। ब्रश एक विशेष घास तथा गिलहरी, ऊँट या बकरी के बालों से बनाए जाते थे। कागज की लुगदी से बनाए गए बोर्ड पर चित्रित किए जाने वाले इन चित्रों में हल्का उभारदार काम भी किया जाता था। उभारदार काम सफेदा पावडर, गोंद और पीले रंग से बने मिश्रण द्वारा किया जाता था। इन चित्रों में कीमती पत्थरों तथा स्वर्ण के वर्क से सज्जा की जाती थी।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. मैसूर चित्रों को मैसूर चित्र क्यों कहा जाता है?
2. मैसूर चित्रों का विकास किस काल में हुआ?
3. मैसूर चित्र किस दक्षिण भारतीय चित्रशैली की उपशाखा है?
4. मैसूर चित्रों की क्या विशेषताएँ हैं?

क्रियाकलाप

अपने इलाके के किसी पुस्तकालय में जाइए और तंजौर और मैसूर के चित्र एकत्र कीजिए। अब आप प्रत्येक चित्रशैली के कम-से-कम दो फोटो चिपकाइए और इन दोनों शैलियों के अंतर का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

9.3 दक्कनी लघुचित्र

प्रिय शिक्षार्थी, आइए हम दक्कनी लघु-चित्रकला के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

बुनियादी सूचना

मध्यकाल में भारतीय प्रायद्वीप का वह भाग जो तत्कालीन बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा और हैदराबाद की रियासतों के अधीन आता था- दक्कन के नाम से जाना जाता था। इन रियासतों में 16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य सृजित किए गए लघुचित्र, दक्कनी लघुचित्र के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनमें भारतीय, ईरानी, फ़ारसी और तुर्की संस्कृति के तत्त्व घुले-मिले हैं। यही कारण है कि दक्कनी लघुचित्रों की शैली और विषयवस्तु में तत्कालीन भारतीय चित्र परंपराओं तथा ईरानी, फ़ारसी और तुर्की कला-मूल्यों का समन्वय दिखता है।

दक्कनी शैली के चित्रकारों ने मुग़ल शैली के चित्रों से प्रेरित होकर अपनी विशिष्ट शैली विकसित की जिसकी अपनी ही पहचान और विशेषताएँ थीं। आदिलशाही, निजामशाही और कुतुबशाही शासकों के संरक्षण में दक्कनी शैली का विकास हुआ। विशेष रूप से इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय (1580 ईसवी से 1627 ईसवी) अत्यंत कला-प्रेमी था। दुनिया भर के कला-संग्रहालयों में संगृहीत दक्कनी शैली में बने, उसके व्यक्ति-चित्र देखने को मिलते हैं। इन चित्रों में दक्कनी शैली की विशेषताएँ- रंगों की चमक, विनम्रता, भव्यता और रहस्यमयी पृष्ठभूमि उभरकर सामने आती है। दक्कनी रंग-योजना चमकदार तथा प्रभावशाली थी, जिसमें सुनहरे व सफेद रंग का अधिक प्रयोग होता था।

अपने पूर्ण विकसित रूप में दक्कनी चित्रकला, किसी भी पैमाने पर मुग़ल चित्रकला से प्रतिस्पर्धा करती प्रतीत होती है। इसमें फ़ारस की लयात्मक कोमलता, दक्कन की गहरी संवेदनशीलता तथा यूरोपीय छवि-चित्रण के अनुशासन का बेहतरीन समन्वय है।

इन चित्रों में ऊर्जा से परिपूर्ण संयोजन और संवेदी रंग तथा आवेगों से भरे पुरुष तथा मोहक स्त्री-आकृतियाँ एक रोमांस की मनोदशा का सृजन करते हैं। भरे हुए सुंदर चेहरे, गोरा रंग, बड़ी व खुली आँखे, तीखे नैन-नक्श, चौड़ा माथा, ऊँची गर्दन, पतली कमर एवं सफाई से तराशे हुए शरीर के साथ प्रत्येक मानव-आकृति भाव तथा आवेगों से भरी हुई चित्रित की गई है। सलीके से पहनी हुई पोशाक और चुनिंदा आभूषण पहनाए गए हैं।

दक्कनी शैली में बने कुछ प्रमुख चित्र हैं- 'हाथी', 'चांद बीबी', 'हाथियों की लड़ाई' 'चिड़िया' और 'बाज़' आदि।

'नुजूम-उल-उलूम' या 'विज्ञान के सितारे' (1570) इस संबंध में सबसे पुराना अभिलेख है, जिसमें लगभग 876 चित्र हैं। इसके अतिरिक्त उस समय के कुछ भित्तिचित्र कुमाटगी स्थित सात मंज़िला महल और जलमहल जैसी पुरानी इमारतों में देखे जा सकते हैं।

दक्कनी के चित्रों में राजपुरुषों के छविचित्र तथा उनकी जीवनी पर आधारित दृश्य देखने को मिलते हैं।

दक्कनी शैली के चित्र वसली, कागज तथा दीवारों पर चित्रित किए गए। अत: उन्हें बनाने हेतु रंगों एवं पद्धतियों का चुनाव भी अवसर के अनुसार किया गया। इनमें सामान्यत: खनिज व प्राकृतिक

रंगों का उपयोग किया गया है। चित्रांकन में लंबी मानव आकृतियों की बनावट संभवत विजयनगर के भित्तिचित्रों का प्रभाव है, जबकि पृष्ठभूमि में पुष्पगुच्छों, ऊँचे क्षितिज और भूदृश्यों का प्रयोग फ़ारसी प्रभाव को दर्शाता है। दक्कनी रंग-योजना चमकदार तथा प्रभावशाली होती है, जिसमें सुनहरी व सफेद रंग-योजना फ़ारसी प्रभाव को दर्शाती है। उत्कृष्ट संयोजन, बढ़िया फिनिशिंग और सामंजस्य दक्कनी लघुचित्र-शैली की विशेषता दर्शाते हैं।

चित्र 9.3: चांद बीबी-बाज के साथ शिकार के लिए जाती हुई

शीर्षक	:	**चांद बीबी-बाज के साथ शिकार के लिए जाती हुई**
समय	:	सोलहवीं शताब्दी
कलाकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	वसली पर खनिज रंग
संग्रह	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

दक्कनी शैली में बना प्रस्तुत चित्र बीजापुर के सुल्तान अली आदिलशाह की पत्नी चांद बीबी का है, जिसने अपने पति की मृत्यु के उपरांत 1580 से 1599 शासन तक संभाला। चित्र में उसे घोड़े पर सवार तथा दायें हाथ में शिकारी बाज लिए, शिकार पर जाते दर्शाया गया है। अग्रभूमि में साथ दौड़ता शिकारी कुत्ता बड़े ही सजीव रूप से चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि में फ़ारसी शैली के अनुरूप हरे भरे पुष्पाच्छादित वृक्ष तथा ऊपर की ओर पहाड़ियों के मध्य सुदूर किला तथा महल चित्रित हैं। चित्र का प्रारूप और संयोजन तथा रंग-योजना दक्कनी शैली की विशेषताओं के अनुरूप हैं। घोड़े की जीन और चांद बीबी के वस्त्र आभूषणों को सुनहरी रंग से उभारा गया है। गतिशील घोड़े का वेग दर्शनीय है।

पाठगत प्रश्न 9.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. दक्कन लघुचित्रों का निर्माणकाल .... है।
2. दक्कन लघुचित्रों का मुख्य केंद्र .... है।
3. दक्कन शैली के चित्रों के रंग समृद्ध और .... है।
4. दक्कन के कलाकारों ने .... से प्रेरणा ली है।

आपने क्या सीखा

दक्षिण भारतीय चित्रकला

तंजौर शैली	मैसूर शैली	दक्कन शैली
पंचमुखी (आंजनेय) चित्रकारी	मत्स्यावतार चित्रकारी	बाज द्वारा शिकार करती चांद बीबी चित्रकारी
समकालीन	20वीं शताब्दी	16वीं शताब्दी
माध्यम खनिज रंग	माध्यम कपड़े पर खनिज रंग	माध्यम वसली के ऊपर खनिज रंग

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी :

- मैसूर शैली की तकनीक की व्याख्या स्वयं करते हैं।
- तंजौर शैली और दक्कन शैली को पहचानते हैं और चित्र बनाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. दक्षिण भारत की पारंपरिक चित्र-शैलियों का वर्णन कीजिए।
2. तंजौर चित्रों के विकास के बारे में लिखिए।
3. तंजौर चित्र किस माध्यम से बनाए गए? इन चित्रों के विषयों का भी उल्लेख कीजिए।
4. तंजौर चित्रों की विशेषताएँ क्या हैं?
5. मैसूर चित्रों को मैसूर चित्र क्यों कहा जाता है?
6. मैसूर चित्रों का विकास किस सदी में और किन शासकों के प्रयासों से हुआ?
7. मैसूर चित्रों की विषयवस्तु तथा विशेषताएँ क्या हैं?
8. मैसूर चित्रों में प्रयोग की जाने वाली सामग्री का वर्णन कीजिए।
9. मध्यकालीन भारत में 'दक्कन' के अंतर्गत कौन-सी रियासतें सम्मिलित थी? दक्कन शैली के चित्र किस कालखण्ड में बनाए गए?
10. दक्कन शैली पर किन संस्कृतियों का प्रभाव था तथा दक्कन शैली की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
11. दक्कन के लघुचित्रों के मुख्य विषय क्या हैं?
12. दक्कन लघुचित्र की रंग-योजना का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

1. (i) समकालीन
2. (ii) सोना
3. (iii) पाँच सिरवाला

9.2

1. मैसूर में विकसित होने के कारण
2. इस शैली का विकास कर्नाटक राज्य के मैसूर नगर में 18वीं सदी में हुआ।
3. मैसूर चित्र-शैली विजयनगर चित्र-शैली की उपशैली है।
4. मैसूर चित्र अपनी भद्रता, शांत रंग-योजना और विवरणात्मक चित्रांकन हेतु जाने जाते हैं।

9.3

1. 16वीं एवं 17वीं शताब्दी के मध्य
2. शासकों के व्यक्ति चित्र
3. चमकदार
4. मुगल स्कूल

शब्दकोश

वसली	लुगदी से बना मोटा कागज
खनिज रंग	विभिन्न पत्थरों को घिस कर तैयार किए गए रंग।
वानस्पतिक रंग	ऐसे रंग जो अनेक प्रकार की वनस्पतियों से प्राप्त किए जाते हैं; जैसे-फूल, पत्तियाँ आदि।